मूल्य
₹120/

UGC Care Listed

मासिक साहित्यिक पत्रिका

नागफनी

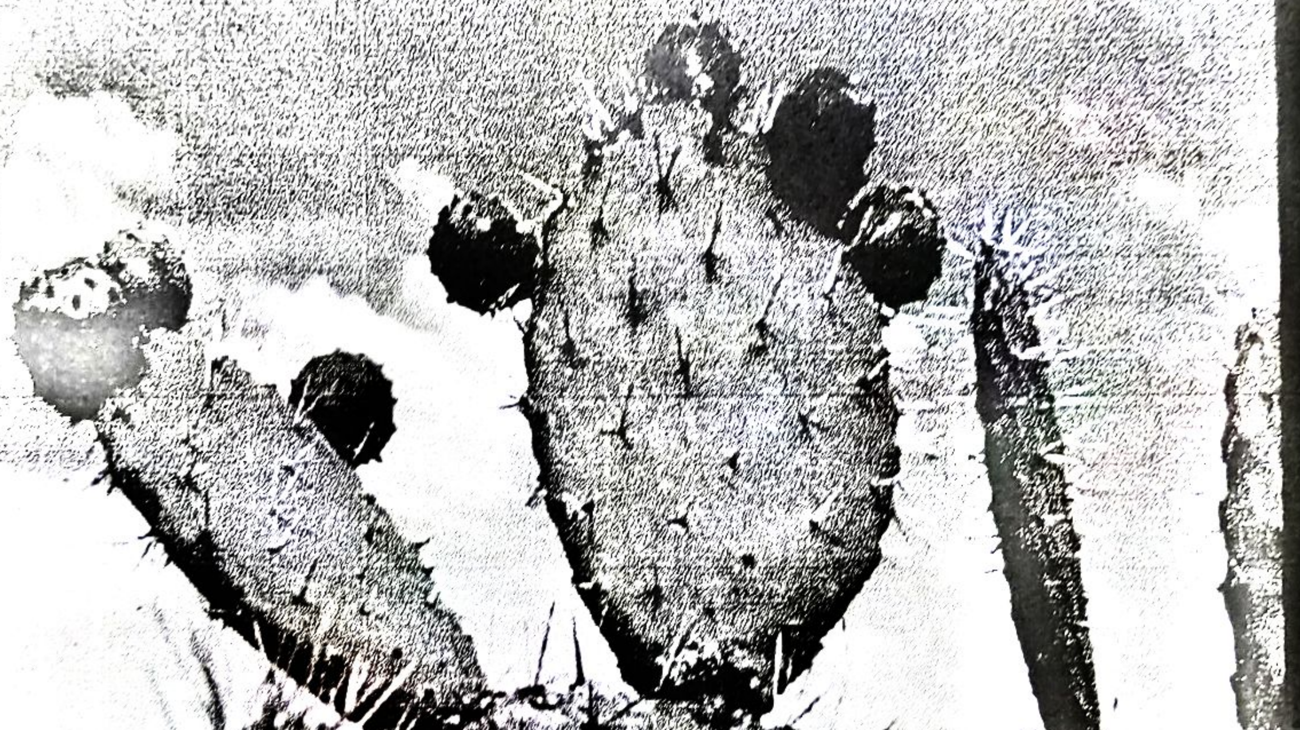

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

नागफनी

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

साहित्यिक विमर्श

1. कन्नड भाषा और साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ-प्रो.संजय एल.मादार 2-4
2. मध्यकालीन हिन्दी काव्य : राम और कृष्ण के शब्द चित्रों के संदर्भ में-डॉ.नीतू परिहार 5-6
3. उदय प्रकाश की कहानियों में उदारीकरण की संस्कृति-डॉ.सुनील पाटिल 7-8
4. साहित्य के मानदण्ड एवं प्रेमचंद के निबंध-डॉ.अमित कुमार तिवारी 9-11
5. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरः-डॉ.संगिता चित्रकोटी 12-14
6. अज्ञेय की काव्य संवेदना : एक अन्तर्यात्रा-डॉ.वीणा जे 15-17
7. 'राम की शक्तिपूजा' मनोभावों की समग्रता का प्रबल साक्ष्य-त्रिनेत्र तिवारी 17-18
8. विष्णु प्रभाकर के स्वागत नाट्य (मोनो लॉग) का शिल्पगत अध्ययनः डॉ.कल्पना मौर्य 19-20
9. प्रेमचंद और आज का भारतः किसान विमर्श के संदर्भ में- वैशाली गायकवाड 21-22
10. निराला और उनकी राष्ट्रीय चेतनाः डॉ.समयलाल प्रजापति/डॉ.निरपत प्रसाद प्रजापति 23-24
11. 'सुख' तलाशते साठोत्तर समाज का 'दुख'-डॉ.दीपक जाधव 25-27
12. भारतीय अन्नदाता की त्रासदी का उपन्यास 'अकाल में उत्सव'-डॉ.मृत्युंजय कोईरी 27-29
13. हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श : यथार्थवादी चिंतन -डॉ.सुरेश सिंह राठौड 30-32
14. मुक्तिबोध और फैन्टेसी : 'अंधेरे में' कविता के संदर्भ में- आरती सिंह राठौर/डॉ.रेशमा अंसारी 33-34
15. रस का आधुनिक काव्य से संबंध - डॉ.कविता त्यागी 35-36
16. जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य में लोकजीवन-सुनीता 37-38
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक चिंतन के द्वारा राष्ट्रीय चेतना-श्रीमती मीना शर्मा 39-40
18. साहित्य से सिनेमा फिल्मांकन की समस्या पर विमर्श (हिन्दी सिनेमा के संदर्भ में)-संजय सिंह/डॉ.शाह आलम 41-43
19. 'नए इलाके में': नए इलाके की खोज करती कविताएं-डॉ.अन्सा ए 44-46
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी की हास्य व्यंग्य कविता : डॉ.उर्विजा शर्मा 47-48
21. हिंदी साहित्य में विकलांगता का चित्रण-मोनी 49-52
22. निराला का अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह-डॉ.कृष्ण बिहारी राय 53-54
23. इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य-श्रीमती मालती देवी 55-57
24. 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' : पर्यावरण चिंतन का महाकाव्य-डॉ.अंजू लता/आलिया जेसमिना 58-62
25. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में उत्पीडन एवं जीवन संघर्ष -डॉ.कुलदीप सिंह मीना 63-65
26. ढाई बीघा जमीन : आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में-डॉ.जयंत बोबडे 66-68

स्त्री विमर्श

1. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री अस्मितामूलक प्रश्नों की संवेदना-डॉ.बलविंदर कौर 69-71
2. नारी अस्मिता के विविध आयाम-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-डॉ.नीरजा शर्मा 72-73
3. नारी अस्मिता और छिन्नमस्ता उपन्यास-प्रोफेसर आसाराम बेवले 74-76
4. स्त्री लेखन का नया प्रतिमानः स्त्री-भाषा-डॉ.यमुना प्रसाद रतूडी 77-79
5. 'रेत' उपन्यास में चित्रित स्त्री-डॉ. शीतल गायकवाड 80-81
6. कृष्णा अग्निहोत्री की 'और...और...औरत' आत्मकथा में नारी विमर्श-राकेश भील 82-83
7. स्त्री विमर्श के दायरे में 'बारबाला' का अनुशीलन-डॉ.मीना सुतवणी 83-86
8. नन्द चतुर्वेदी की कविता में स्त्री चित्रण-डॉ.विदुषी आमेटा/संगीता भारद्वाज 87-93
9. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण स्त्री जीवन का परिदृश्य :'बेनीमाधो तिवारी की पतोह'के विशेष संदर्भ में- बेबी विश्वकर्मा 94-96
10. वर्तमान समय में नारी की स्थिति-डॉ.पूजा शर्मा 97-98
11. अनामिका की कविता में स्त्री पक्षधरता-डॉ.उषस पी.एस. 99-101
12. 'थेरीगाथा' में चित्रित स्त्री-जीवन की वैयक्तिक समस्याएं- संजय यादव 101-102
13. शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री स्वर की अभिव्यक्ति-चंद्रावती 103-105
14. भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'वंचना'में व्यक्त नारी विचार-परेश सननसे/संजय कुमार शर्मा 106-107

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर
('मातृभूमि के लिए' विशेष संदर्भ में)

-डॉ. संगिता चित्रकोटी
असोसिएट प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष ,
कोएसो लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय, पेझारी,
अलिबाग, रायगड

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में स्वाधीनता संग्राम में तीव्रता आ गयी थी। भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए बहुत से क्रांतिकारियों और स्वतन्त्रता सेनानियों ने अहं भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन अहिंसा के मार्ग से चलाया, भीमाबाई होलकर ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के खिलाफ बहादुरी से लड़ी और अंत तक उसने इंदौर में ब्रिटिश छावनी बनने नहीं दी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राज्य झाँसी को अंग्रेजों क के चंगुल से बचाने के लिए जंग छेड़ी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए आजाद हिन्द फौज का गठन किया। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा राष्ट्रीय नारा बन गया, लोकमान्य तिलक जी ने खुलकर ब्रिटिशों के दमनकारी नीतियों का विरोध कर स्व शासन व पूर्ण स्वराज्य की मांग की। ऐसे ही अनेक क्रांतिकारियोंने अहिंसक और सशस्त्र मार्ग से क्रांति का आंदोलन छेड़ा था। परिणाम स्वरूप हिन्दी साहित्य में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रसम्मान, राष्ट्रीय एकात्मता, भारतीय संस्कृति, समाज सुधार आदि विषयों की प्रधानता रही। भारत भूमि में एक से बढ़कर एक दिग्गज कवि पैदा हुए। उनमें बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, गजानन माधव मुक्तिबोध, माखनलाल चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं। वे स्वाधिनता संग्राम और नवजागरण से प्रभावित हुए और उन्होंने राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत कविताएं लिखी। राष्ट्रीय काव्याधारा की यह गौरवशाली परंपरा चिरकाल से निरंतर चली आ रही है। इसी परंपरा को आगे ले जाने का काम रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने किया है। उत्तराखंड की वादियों में जन्मे कवि 'निशंक' अपने भारत भूमि से जितना स्नेह करते हैं उतना ही उन सरहदों पर मर मिटने वाले जवानों से करते हैं। वे एक भारतीय राजनीतिज्ञ, उत्तराखंड राज्य के पांचवे मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री रहे हैं। वे बचपन से ही काव्य और कहानियाँ लिखते रहे है परंतु उनका पहला काव्य संग्रह 'समर्पण' 1983 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद तमाम व्यस्तता के बावजूद वे लगातार लेखन कार्य कर रहे है। आज उनके 10 कविता संग्रह 12 कहानी संग्रह, 10 उपन्यास, साथ ही पर्यटन ग्रंथ,बाल साहित्य, व्यक्तित्व विकास जैसी 4 दर्जन से भी ज्यादा पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। यह उनके साहित्य की मौलिकता ही है जिसके कारण उनके साहित्य का अँग्रेजी, जर्मनी, फ्रेंच, मलयालम, मराठी आदि कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। 'निशंक' स्व की परिधि से बाहर आकर सामाजिकता, धार्मिकता और राष्ट्रीयता के परिवेश में प्रवेश करते है इसलिए उनके काव्य में आदर्श भाव और दिव्यता विकसित होती हुई दिखाई देती है तथा राष्ट्रीय चेतना का प्रभावी और अनुप्रेरक रूप भी सामने आता है। इसलिए आज रमेश पोखरियाल 'निशंक' का स्थान राष्ट्रकवि के रूप में उच्च पद पर आसीन है। उनकी रचनाओं में अतीत भारत की गौरवमयी झांकी तो है ही साथ में राष्ट्रीय नायकों की वीरता और त्याग का चित्र भी है।

'निशंक' जी का 'मातृभूमि के लिए' काव्यसंग्रह देशभक्ति की भावना से रंगा हुआ है। उसमें देश की मिट्टी की सौंधी महक है। उन्होंने अपने इस काव्य संग्रह में समाज सुधार, बुद्धिवादीता, राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति और मानव प्रेम को अभिव्यक्त किया है। वैसे उनकी कविताएं मानवीय सरोकारों से गहन अभिरुचि रखती है। किंतु समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक विषमता पर भी उनकी दृष्टि टिकी हुई दिखाई देती है जिससे स्पष्ट होता है कि 'निशंक' मूलतः कोमल मानवीय संवेदना के कवि है। इस काव्य संग्रह की भूमिका में डॉ. श्यामधर तिवारी लिखते है– " 'मातृभूमि के लिए' की कविताएँ जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की गहरी भावनाओं के बिंबों से संपृक्त हैं। कवि स्वयं को राष्ट्र की बलिवेदी पर अर्पण करने को तत्पर है। यही नहीं देशवासियों को भी सतत सजग होने के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ग, भाषा, प्रांत, क्षेत्र, संप्रदाय, का हो उसके अन्तर्मन को उद्दीप्त करने में मातृभूमि के लिए की कविताएं सक्षम है।"--[1] स्वयं 'निशंक' जी मातृभूमि के लिए इस काव्य संग्रह के उद्देश्य के बारे में लिखते हैं--" मेरे इस काव्य संग्रह का उद्देश्य भावी पीढ़ी में राष्ट्रीयता की भावना कूट कूट कर भरना एवं जन जन को देशभक्ति से ओतप्रोत करते हुए मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर की भावना को जागृत करना है।"--[2] उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के कई सोपान है। कहीं पर वे भारत के गौरवशाली अतीत के प्रति आस्था प्रकट करते है तो कहीं वर्तमान दयनीय दशा का हृदय स्पर्शी अंकन करते है। कहीं सैनिकों की वीरता पर सद्भावना व्यक्त करते है तो कहीं सैनिकों का मनोबल बढ़ाते है। आज देश न केवल सीमा के बाहर के खतरों से नहीं बल्कि सीमा के अंदर भी कई खतरों से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में कहीं भी सैनिकों का मनोबल ना ढले इसलिए 'निशंक' जी 'कुर्बान होगा देश पर' इस कविता में वीरों को प्रेरणा देते है–

"अब रक्त न पानी बने/शीश अपना झुके नहीं,
लाख संकट सामने हों/वह वीर है जो रुके नहीं।
दृढ़ता से जो बढ़ा,/वह सफलता ही पाएगा,
क़ुर्बान होगा देश पर जो,/इतिहास उसी को गाएगा।"--[3]

सैनिकों के कारण हम सुरक्षित रहते है। उन्ही के कारण हम अपने परिवार के साथ निश्चिंत होकर जीवन बिताते है। इसलिए हमारे हृदय में उनके लिए आदर और सम्मान का भाव हमेशा होना चाहिए। सैनिक जब देश के लिए लड़ता है तो उसके सामने अपना परिवार नहीं केवल देश होता है। देश के लिए वह हँसते-हँसते अपनी जान कुर्बान कर देता है। सच्चा सैनिक देश के लिए जीता है और देश के लिए मरता है। इसी बात को निशंक जी 'देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण' इस कविता में इस तरह

कहते है–

"काँटों ने फूलों का भेदन किया है,

देश में दुष्टों ने छेदन किया है।

तुमको बचानी है भारत की शान

देश के सपूतों, करो तुम प्रयाण,

हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण ॥" --'

निशंक परिवर्तन एवं विकसनशील परंपरा के कवि है। जीवन और जगत में स्थैर्य उन्हे अच्छा नहीं लगता। इसलिए गतिशीलता की आकांक्षा लेकर वे विकास के नए मार्ग तलाशते है। विकास और सुधारवादी भावनाओं से ओतप्रोत होकर निशंक जी सामाजिक समस्याओं में अपेक्षित सुधार लाने के लिए काव्य का सहारा लेते है। । अस्पृश्यता, जातीयता, हिन्दू-मुस्लिम एकता, नारी को उचित सम्मान आदि अनेक युगीन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करके अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में उन्होने अनेक सुधारों को शामिल कर लिया। उनकी रचनाओं में सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त होता हुआ दिखाई देता है। 'भारतीयो आज' इस कविता में वे देश में जातीयता का जो विष फैलता जा रहा है उसकी चिंता व्यक्त करते हुए भारतीय जनता को जागृत करने का कार्य करते है –

"जातियों का विष भयंकर, फैलता ही जा रहा है,

इसलिए जग द्रोह करने इस ज़मीं पर आ रहा है।

किंतु हम इस भूमि पर, विद्रोह को पलने न देंगे,

आज हमको देश-भर से द्रोहियों को छानना है।

भारतीयो, आज का क्षण-क्षण हमें पहचानना है।"--'

यहाँ कवि देशद्रोहियों के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस करते है। समस्या किसी भी प्रकार की हो उसका विरोध करना वे अपना दायित्त्व समझते है। किसानों का किसी न किसी रूप में शोषण होता ही रहता है। उनकी दशा बद से बदतर हो रही है। इसलिए वह आत्महत्या करने के लिए मजबूर है। वैसे तो किसान अन्नदाता है। राष्ट्र के आर्थिक ढांचे के रक्षक है। पर उनकी ऐसी शोचनीय दशा देखकर कवि व्यथित होते है और अपने 'बढ़ चले हम ग्रामवासी' इस कविता में कृषक वेदना को वाणी देते है। –

"चीख़ते पशु और पक्षी, ताल सूखे क्यों पड़े,

इक बूँद पानी को तरसते, मौत के मुँह में खड़े।

हम कब तलक लुटते रहें, मिटते रहेंगे साथ में

अब बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में।" –'

कवि 'निशंक' हिन्दी के साधक और भक्त है। उनकी कमाना है कि विश्व में भारत के ध्वजारोहण हेतु देश में हिन्दी को सम्मान मिले। सहज स्नेह के साथ वे 'हिंदी देश की शान' इस कविता में हिन्दी भाषा प्रेम को मनोरम अभिव्यक्ति प्रदान करते है।

"एकता की सूचक हिंदी भारत माँ की आन है,

कोई माने या न माने हिंदी देश की शान है।

भारत माँ का प्राण है,

भारत- गौरव गान है।" --

निश्चित ही हिन्दी से राष्ट्रीय काव्यधारा में देश की संस्कृति और गरिमा मुखरित हुई है। इसने जनमानस में अपूर्व उत्साह और ऊर्जा भरने का अनुकरणीय भूमिका निभाई है। इसलिए कवि हिन्दी की महत्ता को रेखांकित करते है।

निशंक जी अपने काव्य में मानवतावादी सिद्धान्त को भी प्रभावोत्पादक स्थान दिया है। उनका मानव प्रेम देशकाल की सीमा लांघकर विश्व मानवता से जुड़ता है। अर्थात वे वसुधैव कुटुंबकम की स्थापना चाहते है। इसीलिए वे समाज में व्याप्त विसंगतियो, विषमताओं, रूढ़ियाँ अंधविश्वासों मान्यताओं के खिलाफ विद्रोह की आवाज बुलंद करते है।

"आज मानवता रह-रह के रोती है

क्यों न मानवता की बात होती है।

बात आदर्श की कोई सुनता नहीं,

मार्ग परहित का कोई क्यों चुनता नहीं।

अब तो हर बात जैसी ये थोथी है,

क्यों न मानवता की बात होती है।" --'

निशंक जी की दृष्टि में सभी धर्म एवं जाति के लोग मात्र मनुष्य है। मनुष्य अपने अच्छे कर्मों के आधारपर देवत्व प्राप्त करता है। इन्सानियत ही सर्वोपरि है, हिन्दू या मुसलमान, सिक्ख या ईसाई होने से कोई फर्क नहीं पड़ता सब लोग एक है। राष्ट्र के निर्माण और उसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए युग और परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना निर्माण करना अनिवार्य होता है। अपनी 'भारत देश महान' इस कविता में इसी सांप्रदायिक एकता का बखान करते है।

"मंदिर मस्जिद गिरजाघर, यहाँ सबका ही सम्मान है,

एक हाथ में गीता रहती, दूजे हाथ कुरान है।

नहीं मिसाल विश्व में इसकी, वीरों की यह खान,

त्याग, तपस्या, प्रेमभक्ति, किस-किसका करूँ बखान।

अनगिन गाथाएँ जिसकी ये भारत देश महान्।"--'

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ एकता की भावना है, जो राष्ट्रीय बल राष्ट्रीय सुरक्षा तथा अखंडता आधार है। राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना राष्ट्रीय चेतना का महान बल और अनिवार्य शर्त है इसलिए अपनी कविता में वे जातिभेद मजहब-संप्रदाय से ऊपर उठकर एकता और अखंडता की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान करते है।

निशंक जी समाजिकता के आदर्श रंग में रंगे हुए है। इसलिए उनमें देशानुराग का उत्कर्ष भाव जागा है। देशानुराग में देश के समाज, प्रकृति और समस्त मानव के प्रति सद्भाव जागृत होता है। देशानुराग की आकर्षक छटा इनके 'भारत देश महान' कविता के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

" त्याग, तपस्या, प्रेम, भक्ति,

किस-किसका करूँ बखान,

अनगिन गाथाएँ जिसकी ये

भारत देश महान्।" --'"

देश और समाज के उत्कर्ष के लिए उनके मन में मनमोहक भाव था। यही कारण है की उनके काव्य में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का अनूठा भाव है। इनके काव्य में, राष्ट्रप्रेम में मानवतावाद का मुखर और अनुकरणीय रंग उभरा है।

कवि 'निशंक' को अपने देश की संस्कृति से प्रेम है। भारतीय संस्कृति के चित्र आँकते समय कवि ने समस्त ग्राम-परिवेश को साकार कर दिया है। उनकी कविता '

विशेषता हमारी है' भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत है।

"दुनिया में छायी है यहाँ की विवेकता,
कौन न जाने यहाँ ऋषि-मुनियों की श्रेष्ठता।
भोगवादी संस्कृति भी यहीं आकर हारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।"

****

"जाति-धर्म के त्यौहार हर क़दम पर हैं यहाँ,
यहाँ की विपुलता देख अचंभित सारा जहाँ।
भारत की संस्कृति तो कल्याणकारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।" --[11]

'निशंक' राष्ट्रियता के फ़लक पर सांस्कृतिक गौरव का उत्कर्ष देखना चाहते है। इसीलिए वे सांस्कृतिक उत्थान के समर्थक और प्रेमी रहे है। सांस्कृतिक विरासत और गरिमा को भी वे साथ लेकर चलते है। 'विशेषता हमारी है' इस कविता में जन्म-भूमि की गरिमा और उसके प्रति अटूट प्रेम मिलता है। स्वर्णिम अतीत का वर्णन भी उनके इस कविता में मिलती है।

"षोडश कलाओं वाले कृष्ण भी यहीं हुए,
त्यागी दधीचि जैसे और न कहीं हुए।
हर क़दम पर त्याग-तप की गाथा ही न्यारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।"
दुनिया में छायी है यहाँ की विवेकता--[12]

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। संस्कृति ही किसी भी देश की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति, समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वे अपने जीवन मूल्यों का निर्धारण करते है। परंतु वर्तमान काल में हमारे सामाजिक आचार-विचारों पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा हुआ दिखाई देता है। लोग हमारी संस्कृति को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपनाने लगे है। पाश्चात्य संस्कृति के कारण कई नए-नए आविष्कार,प्रौद्योगिकी विकास, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्र में निश्चित विकास हुआ है किन्तु लगातार हमारा क्षणिक मिथ्या सुख की प्राप्ति एवं आडंबरपूर्ण दिखावे की वजह से अपनी मूल संस्कृति को भूलना भविष्य में खतरे की घंटी है। इसील्ये निशंक जी अपने काव्य में भारतीय संस्कृति की महिमा का गान करते है।

भारतवर्ष सदैव शांति का प्रतीक रहा है। सहस्त्रो वर्ष पूर्व केवल इसी देश में सर्वयमी शांति हेतु जैसी प्रार्थना की गई थी वैसी विश्व में आज तक कभी और कहीं नहीं की गयी। यजुर्वेद, अथर्ववेद में इसके प्रमाण प्राप्त होते है। संसार में केवल भारत ने समग्र मानव जाति ही नहीं अपितु समग्र प्राणियों के प्रति- मित्र दृष्टि का प्रतिपादन किया। कवि निशंक में प्रेम का एक शांत एवं निर्मल स्त्रोत दिखाई देता है इसीलिए उनके काव्य में क्रांति एवं अहिंसा के स्वर सुनाई पड़ते है। जिन्होंने भारत देश को स्वार्थ से छला है उनके प्रति भी कवि के मन में कहीं भी बदले की भावना नहीं उल्टा कवि स्वयं का बलिदान देकर भी शांति बनाए रखने की बात करते है।' बलिदान देने चला' इस कविता में वे इसी भाव को व्यक्त करते है।

"बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो, मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।
हर मार्ग काँटों से भरा, हर शहर नफ़रत से जला,
जलता रहेगा वतन अपना
न सभ्यता का मान है, न ज्ञान संस्कृति का जिन्हें,
देशहित दिखता नहीं, निज स्वार्थ में उलझे इन्हें।
मैं पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ इन स्वार्थियों से ही छला हूँ,
बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो,
मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।" --[13]

भारत ने सदैव विश्वशांति के लिए काम किया है लेकिन इसका मतलब यह नहीं की भारत देश चुपचाप किसी का अन्याय सहन करेगा। यदि कोई हमें उकसाता है तो उसे उसी की भाषा में समझाने के लिए सक्षम है। वह शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए सदैव तैयार है। इसी भावना को कवि 'निशंक' 'हमने न किसी को ललकारा' इस कविता में व्यक्त करते है–

"विश्व जानता है कि हमने नहीं किसी को ललकारा,
पर जिसने ललकारा हमको, हमने उसको फटकारा।
शांत रहे हम दुनिया में संदेश शांति का देते हैं,
करते हैं सर्वस्व निछावर कब कुछ बदले में लेते हैं?" – [14]

इस प्रकार कवि निशंक के काव्य में राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है। उन्होंने अपनी कविताओं में देश की मिट्टी तथा संस्कृति का गायन किया है। राष्ट्रप्रेम के विविध रूपों को उन्होने अपनी रचनाओं में बड़ी मनोमयता के साथ शब्दायित किया है। सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी कविता में भारत माँ कि ऐश्वर्यशाली वंदना तथा अर्चना हुई है। राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना, देशप्रेम, सांस्कारिक आस्था, नैतिकता उनके काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। उनके काव्य में सामाजिक सरोकार भी सम्मिलित है। वे सामाजिक कुरीतियों को दूर करके एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते है।

संदर्भ -

1. रमेश पोखरियाल 'निशंक' मातृभूमि के लिए, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर - भूमिका – पृष्ठ - 11
2. वहीं -पृष्ठ - 15
3. वहीं -पृष्ठ - 39
4. वहीं -पृष्ठ - 28
5. वहीं -पृष्ठ - 25
6. वहीं -पृष्ठ - 36
7. वहीं -पृष्ठ - 51
8. वहीं -पृष्ठ - 57
9. वहीं -पृष्ठ - 26
10. वहीं -पृष्ठ - 26
11. वहीं पृष्ठ - 42
13. वहीं पृष्ठ - 52
14. वहीं पृष्ठ - 59